वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर

मख़्मूर सईदी



# पेड़ गिरता हुआ

प्रथम संस्करण 1986

मूल्य : तीस रुपये मात्र

प्रकाशक :
वाग्देवी प्रकाशन
सुगन निवास, चन्दन सागर,
बीकानेर

मुद्रक :
साखला प्रिन्टर्स
सुगन निवास, चन्दन सागर,
बीकानेर

आवरण : हरिप्रकाश त्यागी

PERH GIRTA HUA (*Urdu Poetry*)
*by* Makhmoor Saeedi

Rs. 30-00

मख्मूर सईदी की कविता परम्परा और आधुनिकता की सन्धि-रेखा की कविता मानी जाती रही है। लेकिन यह मान लेना मख्मूर की कविता को अधूरा समझना ही नही, परम्परा और आधुनिकता को एक-दूसरे के बरक्स खड़ा कर देना है। परम्परा एक मूल्य दृष्टि है जबकि आधुनिकता अपनी परिस्थिति की पहचान—और ये दोनो अनिवार्यतः एक-दूसरे के विरोध में नही हैं क्योकि अपनी परिस्थिति की पहचान में अपनी परम्परा की पहचान भी निहित है। जब किसी काव्य-प्रतिभा की यात्रा समकालीन परिस्थितियो के बोध का रचनात्मक साक्ष्य देते हुए उन मे भी अपनी मूल्य-परम्परा का अन्वेषण करती है तो उस काव्य-सवेदना का उद्घाटन होता है जो मख्मूर सईदी जैसे कवियो की सार्थकता को रेखांकित करती है।

मख्मूर को आधुनिक कवि कहने मे कुछ लोगों को हिचक हो सकती है क्योकि उन की शाइरी के बिम्बों-प्रतीको का आधुनिक जीवन से प्रत्यक्ष रिश्ता नही दीखता। लेकिन मख्मूर उर्दू के शाइर हैं और एक संवेदनशील और ज़िम्मेदार कलाकार की तरह उन्हे अपने माध्यम—अपनी भाषा—की सम्प्रेषण परिस्थिति का वाजिब अहसास है। उर्दू कविता का सम्प्रेषण-संस्कार और परिस्थिति आज भी मुख्यतः वाचिक है—यद्यपि प्रकाशन की सुविधा पहले की अपेक्षा मे बढी है—और एक शाइर की हैसियत से मख्मूर इस परिस्थिति की अनदेखी नही कर सकते। अपनी सम्प्रेषण परिस्थिति की यह पहचान ही मख्मूर की कविता मे उस आत्मीय टोन की पृष्ठभूमि है जिस की वजह से वह सहज सम्प्रेषणीय बन सकी और श्रोता समूहों द्वारा सराही जाती रही है।

लेकिन साथ ही मख्मूर के कवि को अपने समय के उन तनावों-दबावों का भी तीखा अहसास है जिन का मुकाबला वह उस सरल आस्था से करना चाहते हैं जो वाचिक समाजो की खास ताकत है। किन्तु मख्मूर उन लेखकों में नही हैं जो हर क्षण अपनी आस्था का ढोल पीटते रहते हैं। यह आस्था उन की कविता के रेशे-रेशे मे फैलती है—क्योकि उन की काव्य-सवेदना समय की शक्ति को पहचानने के साथ-साथ कविता की शक्ति को भी पहचानती है और इसलिए समय के सम्मुख आत्मसमर्पण नही कर देती। जब कवि प्रतिपल समय से लड़ने की या उसे अपने अनुकूल करने की घोषणा करता दिखता है तो कही न कही वह उस से गहरे मे आतंकित हो रहा

होता है। मख्मूर की कविता अपनी आस्थाओं की अलग से घोषणा नहीं करती लेकिन जब यह कहती है :

रो के उस पार न जायेगी जुदा राह कोई
भीड़ के साथ ही दलदल मे उतरना होगा

तो यह न केवल अपनी बृहत्तर अस्मिता और नियति को पहचानती है बल्कि राह बदलने की आवश्यकता का संकेत करती हुई भी मिकोश वाल्दा के कथन की याद दिलाती है कि कविता इतिहास की सेवा नहीं करती बल्कि उस के बोझ का सार्वभौमिक मानवीय अनुभव मे रूपान्तरण करती है।

शायद इसीलिए मख्मूर की कविता मे यह आत्मविश्वास है जो अपनी भाषा में 'सार्वभौमिक मानवीय अनुभव' की पहचान से उपजता है। उन की काव्य-भाषा मे एक विरल सहजता है जो गहरे से गहरे अनुभवों को बड़ी आत्मीयता के साथ हमारी संवेदना मे उतार देती है :

सर पटकते हैं बगोले यहीं मौजों की तरह
अब जो सहरा है किसी दिन ये समुन्दर होगा

हिन्दी कविता मे पिछले कुछ अर्से से 'छन्द की वापसी', 'लिरिक की वापसी' और वाचिक परम्परा का बहुत चर्चा रहा है। मख्मूर की कविता हिन्दी पाठक को शायद उस कविता की एक झलक दे सकती है जो श्रोता-समूहों मे तो प्रभावशाली है ही, पर पाठक के एकान्त मे भी बेअसर नहीं हो जाती।

मख्मूर भाई मेरी एक प्रिय भाषा के वरिष्ठ रचनाकार तो हैं ही, मैं उन्हें बड़ा भाई मानता रहा हूँ। इसलिए यह भूमिका लिखते हुए जहाँ मन मे सकोच है वहीं यह अहसास भी कि शायद यह सब से बड़ा सम्मान है जो एक वरिष्ठ रचनाकार अपने बाद के रचनाकार को दे सकता है। उन के अनवरत स्नेह की कामना करता हूँ।

—नन्दकिशोर आचार्य

# अनुक्रम

## ग़ज़लें

नज़्में

# عطایا

रंग पेड़ों का क्या हुआ देखो
कोई पत्ता नहीं हरा देखो

ढूंढ़ना अक्से-गुमशुदा मेरा
अब कभी तुम जो आईना देखो

क्या अजब बोल ही पड़ें पत्थर
अपना क़िस्सा उसे सुना देखो

दोस्ती उस की निभ नहीं सकती
दिल न माने तो आज़मा देखो

अजनबी हो गये शनासा लोग
वक़्त दिखलाये और क्या देखो

ज़िन्दगी को शिकस्त दी गोया
मरने वालों का हौसला देखो

ख़ुदगरज़ हैं ये बस्तियाँ 'मख़्मूर'
तुम भी अपना बुरा-भला देखो

अक्से-गुमशुदा=खोया हुआ प्रतिबिम्ब. शनासा=परिचित. शिकस्त=हार

न रस्ता न कोई डगर है यहाँ
मगर सब की किस्मत सफर है यहाँ

छिडी है वहम सुर्खरूई की जग
लहू में हरिक चेहरा तर है यहाँ

जबाँ पर जिसे कोई लाता नही
उसी लफ्ज का सब को डर है यहाँ

जीये जायेंगे झूठी खबरो प'लोग
यही एक सच्ची खबर है यहाँ

हवाओं की उगली पकड़ कर चलो
वसीला यही मोतबर है यहाँ

न इस शहरे-बेहिस को सहरा कहो
सुनो ! इक हमारा भी घर है यहाँ

पलक भी झपकते हो 'मख्मूर' क्यूँ
तमाशा बहुत मुख्तसर है यहाँ

सुर्खरूई=विजय, वसीला=माध्यम मोतबर=विश्वसनीय, शहरे बेहिस=संवेदनाशून्य नगर मुख्तसर=संक्षिप्त

हर दरीचे में मिरे क़त्ल का मंजर होगा
शाम होगी तो तमाशा यही घर घर होगा

पल की दहलीज प' गिर जाऊँगा वेसुध हो कर
बोझ सदियों की थकन का मिरे सर पर होगा

मैं भी इक जिस्म हूँ, साया तो नहीं हूँ तेरा
क्यूँ तिरे हिज्र में जीना मुझे दूभर होगा

अपनी ही आँच से पिघला हुआ चाँदी का बदन
सरहदे-लम्स तक आते हुए पत्थर होगा

लोग इस तरह तो शक्लें न बदलते होंगे
आईना अब उसे देखेगा तो शशदर होगा

सर पटकते है बगोले वही मौजो की तरह
अब जो सहरा है किसी दिन ये समुन्दर होगा

दश्ते-तदबीर में जो ख़ाक-ब-सर है 'मख़मूर'
हो न हो मेरा ही आवारा मुक़द्दर होगा

दरीचे=खिड़की. हिज्र=वियोग. सरहदे-लम्स=स्पर्श की सीमा. शशदर=भचम्भित. बगोले=धूल के बवण्डर दश्ते-तदबीर=प्रयास का जंगल. ख़ाक-ब-सर=हताश, शोक से रोता पीटता.

रूख कभी अपना हवाओं को बदलना भी पड़ा है
सरफिरा कोई परिन्दा जब हवाओ से लडा है

किन गुज़रते मौसमो का मर्सिया मैं सुन रहा हूँ
फिर ये किसका नाम लेकर पेड़ से पत्ता झड़ा है

जब वो ज़िन्दा था तो इक छोटे से क़द का आदमी था
आज चौराहे प' जिसका देवक़ामत बुत गडा है

ख़ुशनुमा है ताज जो बख़्शा गया है, मुझको लेकिन
काम मेरे आ नही सकता कि मेरा सर बडा है

पीछे मुड़-मुड़ कर निगाहें गुमशुदा मज़र को ढूढें
दायें-बायें कुछ नही है, सामने पर्दा पडा है

सहल समझे थे गुजर जाना मसर्रत की तलब से
अहले ग़म ने अब ये जाना मरहला ये भी कड़ा है

मुनअकिस है जिसमे ऐ 'मख़्मूर' अक्से-गुल कही से
आहनी दीवार में ये आईना किसने जड़ा है

मर्सिया=मृत्यु-गीत. देवक़ामत=राक्षस का-सा ख़ुशनुमा=मनोरम. गुमशुदा मज़र=खोये हुए दृश्य सहल=सरल. मसर्रत=प्रसन्नता. तलब=याचना. मरहला=मोड़. मुनअकिस=प्रतिबिम्बित अक्से-गुल=गुल की प्रतिछाया आहनी=लोहे की.

लड़ पड़े बेबात भी, होता रहा ऐसा बहुत
हम भी कम सरकश न थे, ख़ुदसर जो थी दुनिया बहुत

अपने मिट्टी के बदन में हूँ अभी सिमटा हुआ
जर्रा-ज़र्रा हो के मैं बिखरा तो फैलूंगा बहुत

कोई मेहमाँ आ रहा है ताज़ा हंगामे लिये
बदला बदला है पुराने शहर का नक़्शा बहुत

तेरी परछाईं नजर आ आ के खो जाती रही
जिन्दगी की भीड़ में हम ने तुझे ढूंढा बहुत

इस तरफ़ से जाने कितने काफ़िले आये गये
अब सफ़र मुश्किल नहीं, हमवार है रस्ता बहुत

तू कोई साया है या ठंडी हवा, दुनिया ने क्यूँ
चिलचिलाती धूप में रस्ता तिरा देखा बहुत

देख लो 'मख़्मूर' इन मे अपना परतौ भी कहीं
अक्स है चेहरों के आईना-दर-आईना बहुत

सरकश=विद्रोही. ख़ुदसर=मनमानी करने वाली. ज़र्रा-ज़र्रा=कण-कण.
परतौ=प्रतिछाया. अक्स=बिम्ब. आईना-दर-आईना=दर्पण-दर्पण.

रातों का अंधेरा ही अब दिन का उजाला है
ऐ शहरे-हवस तेरा सूरज भी तो काला है

किस्मत की लकीरें इस कोशिश मे हुई ज़ख़्मी
गिरते हुए इक घर को हाथों प' सभाला है

सूरज की बुलन्दी से कुछ संगे-सदा फेंको
यूँ रात का सन्नाटा कब टूटने वाला है

मिट-मिट के उभर आये, कुछ और निखर जाये
तस्वीरे-तमन्ना का हर रंग निराला है

अश्कों के दिये सूने ताक़ो प' हमी रख दें
वीरान बहुत दिन से यादों का शिवाला है

ख़ुद अपना लहू पीना, मरने के लिए जीना
ऐ हमनफ़सो तुम ने क्या रोग ये पाला है

'मख़्मूर' ये मूरत किस मंदिर से निकल आई
चाँदी का बदन, सर पर सोने का दुशाला है

शहरे-हवस=वासना का नगर  संगे-सदा=आवाज़ का पत्थर.  तस्वीरे-तमन्ना=इच्छा का चित्र  ताक़ो=दीवार मे बना हुआ छोटा मेहराबदार खोल. हमनफ़सो=मित्रो.

बहार लौट ही आई तो क्या कि तू ही न था
नज़र को ज़ौक़े-तमाशा-ए-रंगो-बू ही न था

अबस किसी से थी हुस्ने-क़बूल की उम्मीद
हमें सलीक़-ए-इज़्हारे-आरज़ू ही न था

फिर उस सफ़र का तो लाहासिली ही हासिल थी
क़दम किसी का सरे-राहे-जुस्तजू ही न था

अब उस नज़र ने भी आख़िर यही गवाही दी
कि चाक दामने-दिल क़ाबिले-रफ़ू ही न था

कुछ और लोग भी थे जो हमें अज़ीज़ रहे
सबब हमारी उदासी का एक तू ही न था

सबब कुछ उस के तग़ाफ़ुल का पूछते उस से
रहा ये रंज कि वो शख़्स रूबरू ही न था

जला दरख़्त थी अपनी भी ज़िन्दगी 'मख़्मूर'
रगों में जिस की कोई जज़्ब-ए-नमू ही न था

ज़ौक़े-तमाशा-ए-रंगो बू=रंग और गंध को देखने की रुचि. अबस=व्यर्थ. हुस्ने-क़बूल=श्रद्धा से स्वीकृति. सलीक़-ए-इज़्हारे-आरज़ू=आकांक्षा की अभिव्यक्ति का सुघड़पन. लाहासिली=अप्राप्य. हासिल=प्राप्य. सरे-राहे-जुस्तजू=खोज की राह पर. दामने-दिल=दिल के दामन का फटा हुआ भाग. क़ाबिले-रफ़ू=रफ़ू के योग्य. अज़ीज़=प्रिय. तग़ाफ़ुल=उपेक्षा. जज़्ब-ए-नमू=विकसित होने की भावना.

नजरों से साहिलों के नजारे निहाँ हुए
गहरे समुन्दरो मे सफीने रवाँ हुए

गुजरी तमाम उम्र खुद अपनी तलाश मे
हम खुद ही अपनी राह के संगे-गिराँ हुए

था हम से तेजगाम वहुत कारवाने-वक़्त
हम रफ़्ता-रफ़्ता गर्दे-पसे-कारवाँ हुए

ताबीर की तलाश में खुद खो गये है हम
देखे थे जितने ख्वाब सभी रायगाँ हुए

आईन-ए-नज़र में था किन मंजिलों का अक्स !
हम को गुवारे-राह प' क्या-क्या गुमाँ हुए

'मख्मूर' मेरी खानाखराबी गवाह है
वो मेरे घर मे आये, मिरे मेहमाँ हुए

साहिलो=किनारो निहाँ=छुप जाना सफीने=नावें. रवाँ=रवाना संगे-गिराँ=भारी पत्थर. तेजगाम=शीघ्रगामी. कारवाने-वक्त=समय का कारवा. रफ्ता-रफ्ता=धीरे-धीरे. गर्दे-पसे-कारवाँ=कारवा के पीछे की धूल ताबीर=फल. रायगाँ=व्यर्थ. आईन-ए-नजर=दृष्टि का दर्पण. अक्स=प्रतिबिम्ब गुवारे-राह=राह की धूल. खानाखराबी=घर की खराबी

जो ये शर्ते–तअल्लुक है, कि है हम को जुदा रहना
तो ख्वाबों मे भी क्यूं आओ, खयालों में भी क्या रहना

पुराने ख्वाब पलकों से झटक दो, सोचते क्या हो
मुकद्दर खुश्क पत्तों का है शाख़ों से जुदा रहना

शजर ज़ख़्मी उमीदों के अभी तक लहलहाते हैं
इन्हे पतझड के मौसम में भी आता है हरा रहना

कभी गुज़रेगा इन गलियों से इक सैले-बला यारों
ये मिट्टी के मकां ढह जायेंगे सब, इन में क्या रहना

गुजरते रोज़ो-शब के दर्मियां ये बेहिसी मेरी
किसी पत्थर का जैसे बीच रस्ते में पड़े रहना

लहू रोती हुई आँखों में हसरत तुझ को पाने की
सुलगते पानियों में इक लरज़ते अक्स का रहना

अजब क्या है अगर 'मख़्मूर' तुम पर यूरिशे–ग़म है
हवाओं की तो आदत है चिराग़ों से ख़फ़ा रहना

शर्ते तअल्लुक=सम्बन्ध की शर्त. खुश्क=शुष्क. शजर=पेड़.
सैले-बला=विपत्ति की बाढ़. रोज़ो-शब=दिन-रात. बेहिसी=
संवेदन शून्यता. अक्स=प्रतिबिम्ब. यूरिशे-ग़म=दुखो का हमला.

बीते मौसम जो साथ लाती है
वो हवाये किधर से आती है

घर से क्या सैर के लिये निकले
रौनकें अब तो दिल दुखाती है

दूर तर तुझ से हो गये तो खुला
कुर्बतें फासला बढाती है

दिन निकलता नजर नही आता
और रातें गुजरती जाती हैं

रोशनी मे भटकने वालों को
जुल्मते रास्ता दिखाती है

जो भूला दी सभी ने ऐ 'मख्मूर'
मुझ को बातें वो याद आती हैं

कुर्बतें=सामीप्य का बहुवचन    जुल्मतें=अंधेरे

बसे बसाये परिन्दों के घर उजड़ने लगे
कि आँधियों में जड़ों से दरख़्त उखड़ने लगे

सुलगते दश्त मे चश्मा कही नही फूटा
और ऐसी प्यास कि सब ऐड़ियाँ रगड़ने लगे

अना के हाथ में तलवार किस ने दे दी थी
कि लोग अपनी ही परछाइयों से लडने लगे

लहू का सैल वो फिर बस्तियों की सम्त बढा
वो जंगलो में दरिन्दे कही झगड़ने लगे

जो मंज़िलें हैं तिरी, सर तुझी को करनी है
गिला न कर, कि तिरे हम सफर बिछड़ने लगे

तिरी तलब की ये राते, ये ख्वाब कैसे है
कि रोज नींद में हम तितलियाँ पकडने लगे

घड़ी ज़वाल की आई तो दफअतन् 'मख़्मूर'
बने बनाये सभी सिलसिले बिगडने लगे

दश्त=जंगल. अना=अहं. सैल=बाढ. सम्त=ओर.
तलब=आकांक्षा. ज़वाल=पतन. दफअतन्=अचानक.

एक अहसासे-जियाँ, लम्हा-ब-लम्हा क्या है
सोचता हूँ: मिरे इमरोज का फ़र्दा क्या है

कोई मंजर है न आवाज, तमाशा क्या है
किस ने डाले है ये पर्दे? पसे-पर्दा क्या है

कभी रोशन, कभी तारीक, फ़जा इस घर की
ताके-दिल मे कभी जलता, कभी बुझता क्या है

हर क़दम, पाँव के नीचे से निकलती-सी जमी
दम-ब-दम, हाथ से जाती सी ये दुनिया क्या है

अक्स इस आईने मे कोई निखरता ही नही
दर्मियाने-दिलो-दुनिया ये धुआँ-सा क्या है

मैं, कि हर चेहरे में खुद अपना ही चेहरा देखूँ
अजनबी भीड़ से यारो मिरा रिश्ता क्या है

ये हवायें तिरे हाथ आ न सकेंगी 'मख़्मूर'
तू सदा बन के तआक़ुब मे लपकता क्या है

अहसासे ज़ियाँ=हानि की अनुभूति लम्हा ब-लम्हा=क्षण प्रति क्षण इमरोज=आज, वर्तमान. फर्दा=भविष्य मजर=दृश्य. पसे पर्दा=पर्दे के पीछे तारीक=अंधेरी. ताके-दिल=दिल के मोखल दम-ब-दम=पल पल, साँस-साँस अक्स=प्रतिबिम्ब. दर्मियाने-दिलो-दुनिया=आन्तरिक और बाह्य के बीच, तआक़ुब=पीछा करना

मुंतजिर उस का कोई खुद उस के घर में रह गया
वो मुसाफ़िर था किसी लम्बे सफ़र में रह गया

आस्मां-पैमा इरादा, बालो-पर में रह गया
हर परिन्दा कुछ जमीनों के असर मे रह गया

यूं तो जो पाया सफ़र में, सब सफ़र में रह गया
रास्ते का आखिरी मंजर नजर में रह गया

जा बसा जोड़ा परिन्दों का तो अब जाने कहाँ
घोंसला उलझा हुआ शाखे-शजर में रह गया

तू नहीं लेकिन तिरा परतौ इस उजड़े दिल में है
जलता बुझता इक दिया सूने खण्डर में रह गया

रंग सब उस की नजर के, आँसुओं में बह गये
लेकिन इक खुशबू का चेहरा चश्मे-तर मे रह गया

मंजिलों के ख्वाब ऐ 'मख्मूर' अधूरे ही रहे
काफिला खो कर तिलिस्मे-रहगुजर मे रह गया

मुन्तजिर=प्रतीक्षित. आस्मां-पैमा इरादा=आकाश नापने का इरादा. बालो-पर=पंख और उनके नीचे के बाल. शाखे-शजर=पेड की टहनी. परतौ=प्रतिबिम्ब. चश्मे-तर=गीली आँख तिलिस्मे-रहगुजर=राह का रहस्य.

बन सकें जो दिले-रुस्वा के सहारे कम हैं
है शनासा तो बहुत दोस्त हमारे कम हैं

ज़िन्दगी जैसे गुजार आये हों, आलम ये है
यूँ तो दिन हम ने तिरे साथ गुज़ारे कम हैं

थे सफीने तो बहुत पार उतरने वाले
नाख़ुदाओं ने मगर पार उतारे कम हैं

है ग़ज़ब शोख़ी-ए-तस्वीरे-तमन्ना हरचंद
हम ने दानिस्ता कई रंग उभारे कम है

बहुत आवाज़ प' आवाज़ तो देने वाले
दिल मगर खुद ही जिन्हें बढ के पुकारे कम हैं

खेल समझा न तिरे प्यार को हम ने वरना
हम कोई खेल जो खेले है तो हारे कम है

मौत का कोई बहाना नहीं मिलता 'मख़्मूर'
और जीना हो तो जीने के सहारे कम है

दिले-रुस्वा=बदनाम दिल. शनासा=परिचित. सफीने=नावें. नाख़ुदाओं=नाविकों. शोख़ी-ए-तस्वीरे-तमन्ना=इच्छा रूपी चित्र की चंचलता हरचंद=यद्यपि. दानिस्ता=जान-बूझकर.

पे-ब-पे सम्ते-सफ़र अपनी बदलता क्यूँ है
चलते रहना है तो रुक-रुक के संभलता क्यूँ है

तेरे माज़ी की हर उलझन, तिरा अपना साया
अपने ही साये से कतरा के निकलता क्यूँ है

कब सरे-आबे-रवाँ, नक़्श किसी का ठहरा
मौज दर मौज ये इक अक्स मचलता क्यूँ है

तितलियाँ है ये मुलाक़ात की रंगी घड़ियाँ
रंग उड़ जायेगा, पर इन के कुचलता क्यूँ है

नम हवाओं में है किस गर्म बदन की ख़ुशबू
सर्द झोंकों से ये शोला सा निकलता क्यूँ है

आगे इस मोड़ के, रस्ता हो न जाने कैसा
दफ़अतन् आ के यहीं पाँव फिसलता क्यूँ है

बच सका कुछ भी न जब क़हरे-हवा से 'मख़मूर'
इक दिया आस की चौखट प' ये जलता क्यूँ है

पे-ब-पे=निरन्तर. सम्ते-सफ़र=यात्रा की दिशा. माज़ी=अतीत. सरे-आबे-रवाँ=बहते हुए पानी पर. नक़्श=निशान. मौज दर मौज=लहर पर लहर. नम=आर्द्र. दफ़अतन्=अचानक. क़हरे-हवा=हवा की विपदा.

पेड़ गिरता कोई नजर आया
दिल घने जंगलों का भर आया

महफ़िलो महफ़िलों प' खामोशी
किस का अफसाना ख़त्म पर आया

रास्ते मे रुकावटें थी बहुत
मैं हवा की तरह गुज़र आया

रात उतरने लगी है गलियों में
दिन का दुख इख़्तिताम पर आया

इक परिन्दा, हवा का हमपरवाज
मेरे आँगन में क्यूँ उतर आया

ग़मे-जानां की आहटें उभरी
दिले-तन्हा का हम सफ़र आया

आज उस से बिछड़ के ऐ 'मख़्मूर'
दिल बहुत ग़मजदा नजर आया

इख़्तिताम=समाप्त. हमपरवाज=साथ उड़ान भरने वाला. ग़मे-जानां=प्रियतम का दुख. दिले-तन्हा=अकेला दिल. ग़मज़दा=दुख से भरा.

भीड़ में है मगर अकेला है
उस का क़द दूसरों से ऊंचा है

अपने अपने दुखों की दुनिया मे
मैं भी तन्हा हूं वो भी तन्हा है

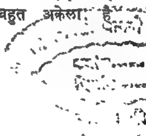
मंजिलें गम की तैं' नही होती
रास्ता साथ साथ चलता है

साथ ले लो सिपर मुहब्बत की
उस की नफ़रत का वार सहना है

तुझ से टूटा जो इक तअल्लुक था
अब तो सारे जहां से रिश्ता है

खुद से मिल कर बहुत उदास था आज
वो जो हँस हँस के सब से मिलता है

उस की यादें भी साथ छोड़ गईं
इन दिनों दिल बहुत अकेला है



तन्हा=अकेला. सिपर=ढाल.

न एक पल सरे-दश्ते-तपाँ रुके बादल
हवा के दोश प' उड़ते चले गये बादल

सुलगती शाम के दर पर उदासियों का नजूल
धुवाँ-धुवाँ सी फिजायें झुके-झुके बादल

सिमट के खुद में कहीं दूर जा छिपा सूरज
उफ़क़ से ता-ब-उफ़क़ फैलने लगे बादल

ये आस्माँ कोई सादा सलेट है जिस पर
बना के नित नई शक्लें मिटायेंगे बादल

उधर थी धूप जिधर बस्तियाँ थीं फूलों की
उजाड़ सम्तों प' साया किये रहे बादल

बिखर के रह गये मौजे-गुबार की मानिन्द
उलझ पड़े थे हवाओं से सरफिरे बादल

जमीं की प्यास बुझाने उठे मगर 'मख्मूर'
समुन्दरों ही प' जा कर बरस पड़े बादल

सरे-दश्ते-तपाँ=जलता हुआ जंगल. दोश=कंधा. दर=दरवाजा. नजूल=उतरना.
ता-ब-उफ़क़=क्षितिज से क्षितिज तक. सम्तों=दिशाओं. मौजे-गुबार=धूल की लहर.

दीवारो-दर को गर्द का बादल निगल गया
आंधी चली तो शहर का मंज़र बदल गया

आया था किस तरफ से वो अंबोहे-आरज़ू
क्यूँ दिल को रौंदता हुआ आगे निकल गया

हद्दे-निगाह तक कहीं अब रोशनी नहीं
सर से तिरे ख़याल का सूरज भी ढल गया

पाया उसे तो अपने ख़तो-ख़ाल खो गये
क़ुर्बत का आईना मिरा चेहरा निगल गया

थी रोशनी की नर्म ख़िरामी भी हश्र-ख़ेज़
आये वो ज़लज़ले कि अंधेरा दहल गया

था सद्दे-राहे-शौक़ जो मंज़िल के नाम पर
ठोकर मिरी लगी तो वो पत्थर पिघल गया

'मख़्मूर' उसी की याद का परतौ है, हो न हो
दिल में ये इक दिया जो सरे-शाम जल गया

दीवारो-दर=दीवार और दरवाज़ा. गर्द=धूल. अंबोहे-आरज़ू=आकांक्षाओं की भीड़. हद्दे-निगाह=दृष्टि की सीमा ख़तो-ख़ाल=तिल और चमड़ी-नैन-नक्श. क़ुर्बत=सामीप्य. ख़िरामी=धीमे चलना. हश्र ख़ेज़=प्रलयकारी. सद्दे-राहे-शौक़=प्रेम मार्ग का अवरोध परतौ=प्रतिच्छाया.

सामने ग़म की रहगुज़र आई
दूर तक रोशनी नज़र आई

परबतों पर रुके रहे बादल
वादियों में नदी उतर आई

दूरियों की कसक बढ़ाने को
साअते-कुर्ब मुख़्तसर आई

दिन मुझे क़त्ल कर के लौट गया
शाम मेरे लहू में तर आई

मुझ को कब शौक़े-शहरगर्दी था
ख़ुद गली चल के मेरे घर आई

आज क्यूँ आईने मे शक्ल अपनी
अजनबी अजनबी नज़र आई ?

हम कि 'मख़मूर' सुब्ह तक जागे
एक आहट कि रात भर आई

साअते-कुर्ब=सामीप्य का क्षण. मुख़्तसर=संक्षिप्त शौक़े-शहरगर्दी=नगर मे घूमने का शौक.

चल पड़े है तो कहीं जा के ठहरना होगा
ये तमाशा भी किसी दिन हमें करना होगा

रेत का ढेर थे हम, सोच लिया था हम ने
जब हवा तेज़ चलेगी तो बिखरना होगा

हर नये मोड़ प' ये सोच क़दम रोकेगी
जाने अब कौन सी राहों से गुज़रना होगा

ले के उस पार न जायेगी जुदा राह कोई
भीड़ के साथ ही दलदल में उतरना होगा

जिन्दगी ख़ुद ही इक आज़ार है जिस्मो-जाँ का
जीने वालों को इसी रोग में मरना होगा

क़ातिले-शहर के मुख़बिर दरो-दीवार भी हैं
अब सितमगर उसे कहते हुए डरना होगा

आये हो उस की अदालत में तो 'मख़्मूर' तुम्हें
अब किसी जुर्म का इक़रार तो करना होगा

आज़ार=रोग. जिस्मो-जाँ=शरीर और आत्मा. क़ातिले-शहर=शहर के क़ातिल. मुख़बिर=ख़बर देने वाले. दरो-दीवार=दीवार और दरवाज़े.

पार करना है नदी को तो उतर पानी में
बनती जायेगी खुद इक राहगुज़र पानी में

ज़ौक़े-तामीर था हम ख़ानाख़राबों का अजब
चाहते थे कि बने रेत का घर पानी में

सैले-ग़म आँखों से सब कुछ न बहा ले जाये
डूब जाये न ये ख़्वाबों का नगर पानी में

कश्तियाँ डूबने वालों के तजस्सुस में न जायें
रह गया कौन, ख़ुदा जाने किधर पानी में

अब जहाँ पाँव पड़ेगा यही दलदल होगी
जुस्तजू ख़ुश्क ज़मीनों की न कर पानी में

मौज दर मौज, यही शोर है तुग़यानी का
साहिलों की किसे मिलती है ख़बर पानी में

ख़ुद भी बिखरा वो, बिखरती हुई हर लहर के साथ
अक्स अपना उसे आता था नज़र पानी में

राहगुज़र=रास्ता. ज़ौक़े-तामीर=निर्माण की रुचि. ख़ानाख़राबों=बेघरबार. सैले-ग़म=दुख की बाढ़ तजस्सुस=खोज. जुस्तजू=तलाश. ख़ुश्क=शुष्क. मौज-दर-मौज=लहर पर लहर. तुग़यानी=तूफ़ान. साहिलों=किनारों अक्स=बिम्ब.

सर पर जो सायबाँ थे पिघलते हैं धूप में
सब दम-ब-खुद खड़े हुए जलते हैं धूप में

पहचानना किसी का किसी को, कठिन हुआ
चेहरे हजार रंग बदलते है धूप में

बादल जो हमसफ़र थे कहाँ खो गये कि हम
तन्हा सुलगती रेत प' जलते हैं धूप में

सूरज का क़हर टूट पड़ा है जमीन पर
मंज़र जो आस पास थे जलते है धूप मे

पत्ते हिलें तो शाखों से चिंगारियाँ उड़ें
सर सब्ज पेड़ आग उगलते है धूप में

'मख़्मूर' हम को साय-ए-अब्रे-रवाँ से क्या
सूरजमुखी के फूल है, पलते है धूप में

सायबाँ=साया करने वाले. दम-ब-खुद=मौन. क़हर=प्रकोप
सब्ज़=हरे-भरे. साय-ए-अब्रे-रवाँ=गतिशील बादल की छाया.

सुन सका कोई न जिस को, वो सदा मेरी थी
मुन्फइल जिस से मै रहता था नवा मेरी थी

आख़िरे-शब के ठिठरते हुए सन्नाटो से
नग्मा बन कर जो उभरती थी, दुआ मेरी थी

खिलखिलाती हुई सुब्हों का समाँ था उन का
खून रोती हुई शामों की फ़ज़ा मेरी थी

मुद्दआ मेरा, इन अल्फ़ाज के दफ़्तर मे न ढूढ़
वही एक बात, जो मैं कह न सका मेरी थी

मुसिफे-शह्र के दरबार मे क्यूं चलते हो
साहिबो मान गया मैं कि ख़ता मेरी थी

मुझ से बचकर वही चुपचाप सिधारा 'मज़्रूर'
हर तरफ जिस के तआकुब में सदा मेरी थी

मुन्फइल=लज्जित नवा=आवाज. आख़िरे-शब=रात का अन्तिम भाग
मुद्दआ=मतव्य. मुसिफे-शह्र=नगर के न्यायाधीश. तआकुब=पीछा करना

अल्फ़ाज में अहसास को ढाला नहीं जाता
मैं चुप हूँ, मगर सर से ये सौदा नहीं जाता

क्या मंज़रे-पुरहौल मिरे चारों तरफ़ है
आँखें तो खुली रखता हूँ देखा नहीं जाता

है कब से उसी शह्र की जानिब सफर अपना
जिस शह्र को जानिब कोई रस्ता नही जाता

चलती है जिलौ मे कई वेकार उम्मीदें
दिल उस की तरफ़ जाये तो तन्हा नही जाता

मेरी ही तरह कैद है, खुद अपनी फज़ा में
उस तक मिरी आवाज का झोंका नहीं जाता

इक धुंध भरे मोड़ प' हम मिल तो गये है
खो जायेंगे फिर, दिल से ये धड़का नहीं जाता

'मख़मूर' न महमिल न कहीं लैली-ए-महमिल
"मजनूँ कोई अब जानिबे-सहरा नही जाता"

अल्फ़ाज=शब्द. अहसास=संवेदना. सौदा=उन्माद. मंज़रे-पुरहौल=डरावना दृश्य.
जानिब=ओर. जिलौ=सानिध्य. महमिल=ऊँट पर स्त्रियों के बैठने का कजावा.
लैली-ए-महमिल=लैला का कजावा. जानिबे-सहरा=सहरा रेगिस्तान की ओर.

ग़मो-निशात की हर रहगुज़र में तन्हा हूँ
मुझे ख़बर है, मैं अपने सफ़र में तन्हा हूँ

मुझी प' संगे-मलामत की बारिशें होंगी
कि इस दयार में शोरीदासर मैं तन्हा हूँ

तिरे ख़याल के जुगनू भी साथ छोड़ गये
उदास रात के सूने खंडर में तन्हा हूँ

गिराँ नहीं है किसी पर ये रात मेरे सिवा
कि मुब्तला मैं उम्मीदे-सहर में तन्हा हूँ

वो बेनियाज़, कि देखो हो जैसे इक दुनिया
मुझे ये नाज़, मैं उस की नज़र में तन्हा हूँ

मुझी से क्यूँ है ख़फ़ा मेरा आईना 'मख़मूर'
इस अंधे शहर में क्या ख़ुदनगर मैं तन्हा हूँ

ग़मो-निशात=आनन्द और दुख. संगे-मलामत=भर्त्सना के पत्थर. दयार=दुनिया. शोरीदासर=दीवाना, विकृत मस्तिष्क वाला गिराँ=बोझ. मुब्तला=फंसा हुआ उम्मीदे सहर=सुब्ह की आशा, ख़ुदनगर=आत्मविस्मृत

जल थल सहरा ख़ुश्क समुन्दर रखते है
आँखों में हम क्या-क्या मंज़र रखते है

ख़ाना बर्बादों मे हमारा नाम भी लिख
शहर मे तेरे हम भी इक घर रखते है

उजले ख़ुश पोशाक बदन इस बस्ती के
मैली रूहें अपने अन्दर रखते है

रस्ते सब चल पड़े किधर को क्या जानें
पाँव ही कब घो घर के बाहर रखते है

तपते झोंके आ कर ठंडे बाग़ों में
फूलों के सीनों पर ख़ंजर रखते है

सब से झुक कर मिलना अपनी आदत है
कद अपना हम सब के बराबर रखते है

सहरा-सहरा सरगरदां है ऐ 'मख़मूर'
हम भी बगूलों जैसा मुकद्दर रखते है

ख़ाना बर्बादों=बेघरबार लोगो. उजले ख़ुश पोशाक=धवल वस्त्र. रूहें=आत्माएं. सहरा-सहरा=रेगिस्तान-रेगिस्तान. सरगरदां=घूमते रहने वाला.

समझ न लम्ह्-ए-हाजिर का वाकआ मुझ को
गये दिनों का मैं क़िस्सा हूँ भूल जा मुझ को

वो कौन शख़्स था कुछ दम-ब-ख़ुद-सा, हैराँ-सा
जो आईने में खड़ा देखता रहा मुझ को

पुकारते थे कई नक़्शे-ना तराशीदा
सकूते-संग से आती थी इक सदा मुझ को

हुआ न सिल्सिल-ए-दर्द मुंतशिर मुझ से
कि साथ अपने बिखरने का खौफ़ था मुझ को

समझ सके जो न मेरी ख़मोशियों की ज़बाँ
मैं सोचता हूँ कि ऐसों ने क्या सुना मुझ को

मैं आप अपनी ख़मोशी की गूँज में गुम था
मुझे ख़याल नहीं, किस ने क्या कहा मुझ को

मैं अपना मद्दे-मुकाबिल था आप ही 'मख़्मूर'
क़दम क़दम प' हुआ मेरा सामना मुझ को

लम्ह्-ए-हाजिर=वर्तमान वाकआ=घटना दम ब-ख़ुद सा=मौन. नक़्शे-ना-तराशीदा=बिना तराशी हुई आकृति. सकूते संग=पत्थर के मौन सिल्सिल-ए-दर्द=दर्द का सिलसिला. मुंतशिर=छिन्न-भिन्न. मद्दे-मुकाबिल=सामने डटने वाला.

ये कैसा रब्त हुआ दिल को तेरी जात के साथ
तिरा खयाल अब आता है बात बात के साथ

कठिन था मरहल-ए-इन्तिज़ारे-सुब्ह बहुत
बसर हुआ हूँ मैं खुद भी गुजरती रात के साथ

पड़ी थीं पा-ए-नजर में हजार ज़ंजीरें
बंधा हुआ था मैं अपने तवहुम्मात के साथ

जुलूसे-वक़्त के पीछे रवाँ मैं इक लम्हा
कि जैसे कोई जनाजा किसी बरात के साथ

कभी-कभी तो ये होता है जैसे ये दुनिया
बदल रही हो मिरे दिल की वारदात के साथ

जो दूर से भी किसी ग़म का सामना हो जाय
पुकारता है मुझे कितने इल्तिफ़ात के साथ

तड़ख के टूट गया दिल का आईना 'मख़मूर'
पड़ा जो अक्से-फ़ना परतवे-हयात के साथ

रब्त=सम्बन्ध जात=व्यक्तित्व. मरहल-ए-इन्तिज़ारे-सुब्ह=प्रात.काल की प्रतीक्षा का समय. पा-ए-नजर=दृष्टि के पैरों में. तवहुम्मात=संशयों जुलूसे-वक्त=समय के जुलूस. रवाँ=चलनेवाला. इल्तिफ़ात=कृपा. अक्से-फना=मौत का प्रतिबिम्ब. परतवे-हयात=जीवन के बिम्ब

चढते दरिया से भी गर पार उतर जाओगे
पाँव रखते ही किनारे प, बिखर जाओगे

वक़्त हर मोड़ प' दीवार खड़ी कर देगा
वक़्त की कैद से घबरा के जिधर जाओगे

ख़ानाबर्बाद समझ कर हमें ढलती हुई रात
तंज़ से पूछती है कौन से घर जाओगे

सच कहो शाम की आवारा हवा के झोंको
उस की ख़ुशबू के तआकुब मे किधर जाओगे

नक़्शे-इमरोज़ से आगे न निगाहे दौड़ाओ
कल की तस्वीर जो देखोगे तो डर जाओगे

मैं भी साया हूँ सियह रात में खो जाऊँगा
तुम भी इक ख़्वाब हो पल भर में बिखर जाओगे

रास्ते शहर के सब बन्द हुए है तुम पर
घर से निकलोगे तो 'मख़्मूर' किधर जाओगे

ख़ानाबर्बाद=जिसके घर न हो. तंज़=व्यग्य. तआकुब=पीछा करने. नक़्शे-इमरोज़=वर्तमान के चिह्न.

# गज़ल

## दायरों के क़ैदी

नये नये दायरे बनाते रहे हम तुम
कि मुद्दतों से
ये दायरों का तिलस्म तश्कीले-कायनाते-बशर की
पहचान बन चुका है
हमारा ईमान बन चुका है
ये दायरे ज़िन्दगी को तक़सीम करके अब आदमी को
तक़सीम कर रहे है
मै अपना दायरा बनाये हुए इसी मे घिरा खड़ा हूँ
तुम अपना इक दायरा बनाये हुए इसी में घिरे खड़े हो
और इन जुदागाना दायरों में भी और कितने दायरे है
इन्ही तिलिस्माती दायरों मे बटी हुई है हमारी हस्ती
निगह इस दायरे में महबूस है दिल उस दायरे का क़ैदी
अजीब जाँकाह पेच-दर-पेच सिल्सिला है
न मुझ में हिम्मत रही है, इतनी न तुम में ये हौसला रहा है
कि इस मुदव्वर तिलिस्म से दो घड़ी को बाहर निकल के देखें
खुली फिज़ा में, हवा के झोंकों के साथ कुछ दूर चल के देखें
ज़मीन कितनी वसीअ़, कितनी बड़ी है अब तक

तिलस्म=जादू. तश्कीले-कायनाते-बशर=मानव-सृष्टि की रचना. तकसीम=बाँटना. जुदागाना=अलग अलग हस्ती=जीवन. महबूस=बंदी जाँकाह=हृदयद्रावी. पेच-दर-पेच=जटिल. मुदव्वर=वृत्ताकार. वसीअ़=विस्तृत.

## हदबंदियो

तुम्हारी मेरी नज़र की हदबंदियों से बाहर
उफ़क़ की मिटती हुई लकीरों के आगे आगे
ये दिलकुशा, दिलफरोज़ वुसअत
यहां मुझे भला या तुम्हे भला उसकी क्या जरूरत
अलग-अलग तंगो-तार से दायरे बनायें हिसार खींचे
कभी-कभी खुद हमारे अन्दर से एक आवारा लहर उठती है
और हम से ये पूछती है
ये दायरों का तिलिस्म क्या है ?
नज़र का धोका है वाहिमा है
मगर न मुझ में रही है हिम्मत, न तुम में ये हौसला रहा है
कि इस मुदव्वर तिलिस्म से दो घड़ी को बाहर निकल के देखें
खुली फिज़ा में, हवा के झोंकों के साथ
कुछ दूर चल के देखें

हदबंदियो=सीमा निश्चित करने का निशान. उफक=क्षितिज. दिलकुशा=रमणीय. दिलफरोज़=दिल को प्रकाशमान करने वाला. वुसअत=विस्तार. तंगो-तार=सकीर्ण और अंधकारमय. हिसार=परकोटा. वाहिमा=भ्रम.

## ख़राबे में

शहर से दूर, बयाबान की तन्हाई में
सहरपरवर, ये पुरअसरार पुराना मंदर
अपने सीने में छुपाये हुए सदियों का सुकूत
चाँदनी रात में इस तरह से एस्तादा है
पैकरे-ख़्वाबे-गिराँ हो जैसे

देवताओं का ये उजड़ा हुआ मसकन, जिसके
ताक़ो-मेहराबो-दरो-बाम शिकस्ता हो कर
इर्तिक़ा-ए-बशरीय्यत का पता देते हैं
नुकरई धुंध में लिपटा हुआ यूँ लगता है
कोई गुमगश्ता जहाँ हो जैसे

ताक़ो-मेहराबो-दरो-बाम के सूनेपन को
सनसनाती हैं हवायें, तो बढ़ा देती हैं
कोई पायल, कोई घुंघरू, कोई झंकार नहीं
फिर भी ख़्वाबीदा फ़ज़ाओं का सकूते-सीमीं
गुंग माज़ी की ज़बाँ हो जैसे

बयाबान=अरण्य. सहरपरवर=जादू जगाने वाला. पुरअसरार=रहस्य से भरा. सुकूत=शान्ति. एस्तादा=खड़े. पैकरे-ख़्वाबे-गिराँ=भारी स्वप्नाकृति. मसकन=घर. ताक़ो-मेहराबो-दरो-बाम=ताक़, मेहराब, दरवाज़ा और छत. शिकस्ता=भग्न. इर्तिक़ा-ए-बशरीय्यत=मानवता के विकास. नुकरई=रजत. गुमगश्ता=खोया हुआ. ख़्वाबीदा=स्वप्निल. सकूते-सीमीं=रजत शांति. गुंग=गूंगा. माज़ी=अतीत.

दासियाँ, रक़्स, अक़ीदत के तराने लब पर
इक न इक दिन तो यहाँ जश्न भी होते होंगे
लेकिन अब इस सनमआबाद का ज़र्रा-ज़र्रा
इस तरह चुप है कि इस पर्दः-ए-खामोशी में
शोरे-फ़रियादो-फ़ुग़ाँ हो जैसे

हम, कि आग़ोश मे ख़्वाबीदा फ़ज़ाओं की यहाँ
धड़कनें दिल की जगाने को चले आये है
हम, कि दोनों में न दासी, न पुजारी कोई
इस प' यूँ हैरतो-हसरत से नज़र करते है
रूहे-फ़र्दा निगराँ हो जैसे

हम से कुछ दूर, ज़रा दूर, वो हँसता हुआ चाँद
जान कर मंजिले-फर्दा का मुसाफिर, शायद
खैरमकदम का हसी रंग निगाहों मे भरे
टकटकी बाध के यूँ देख रहा है हम को
अपनी मंजिल का निशाँ हो जैसे

रक़्स=नृत्य. अक़ीदत=श्रद्धा. सनमआबाद=मूर्तियो की बस्ती. ज़र्रा-ज़र्रा=कण-कण. पर्दः-ए-खामोशी=चुप्पी का पर्दा शोरे-फ़रियादो-फ़ुग़ाँ=आर्त्तनाद और परिवाद का शोर. आग़ोश=अंक. ख़्वाबीदा=स्वप्निल. हैरतो-हसरत=आश्चर्य और निराशा रूहे-फ़र्दा=भविष्य की आत्मा. निगराँ=देखभाल करने वाला. मंज़िले-फ़र्दा=भविष्य का गंतव्य. खैरमक़दम=स्वागत.

## ज़ादे-सफ़र

अजनबी चेहरों के फैले हुए इस जंगल में
दौड़ते भागते लम्हों के दरीचे से कभी
इत्तिफ़ाक़न् तिरी मानूस शबाहत की झलक
पर्द-ए-चश्मे-तख़य्युल प'उभर कर ऐ दोस्त
डूब जाती है उसी पल, उसी साअत, जैसे
तेज़रौ रेल की खिड़की से, ज़रा दूरी पर
किसी सेहरा की झुलसती हुई वीरानी में
नागहाँ मंज़रे-रंगी कोई दम भर के लिये
इक मुसाफ़िर को नज़र आये और ओझल हो जाये

ज़ादे-सफ़र=यात्रा की राह. मानूस=परिचित. शबाहत=समानता. पर्द-ए-चश्मे-तख़य्युल=कल्पना की आँख का पर्दा. साअत=पल. तेज़रौ=द्रुत-गामी. नागहाँ=अचानक. मंज़रे-रंगी=रंगीन दृश्य.

## पनघट

गाँवों की फ़ज़ाओं में, डोलती हवाओं में
नग्मगी मचलती है, मस्तियाँ सनकती हैं
इक शरीर आहट पर, पुरसुकून पनघट पर
गागरें छलकती हैं, चूड़ियाँ छनकती हैं
सिल्सिले रुकावत के दूर तक पहुँचते हैं
जंगख़ुर्दा तलवारें देर तक खनकती हैं

फ़ज़ाओं=वातावरण का बहुवचन. नग्मगी=संगीतमयी आवाज़. पुरसुकून=शान्तिपूर्ण. रुकावत=प्रतिद्वंद्विता. जंगख़ुर्दा=ज़ंग खाई हुई.

## आख़िरी नोहा

मुझे यहाँ भेजने से पहले
ये मुझ से वादा किया था उस ने
कि वो मिरा ग़मगुसार होगा
जो दुख मुझे झेलना पड़ेगा वो उस प' सब आशकार होगा
मिरी निगाहों से दूर हो कर वो दिल से नज़दीकतर रहेगा
अकेलेपन की उदासियों के अज़ाब से बाख़बर रहेगा
जहाँ सभी साथ छोड़ जायेंगे, आसरा उस की ज़ात देगी
फ़ना की तारीक वादियों ने मुझे शऊरे-हयात देगी

ये मुझ से वादा किया था उस ने
मगर मैं तन्हा भटक रहा हूँ
फ़ना की तारीक वादियों में मिरा कोई हमसफ़र नही है

आख़िरी नोहा=विलाप. ग़मगुसार=मित्र. आशकार=प्रकट. अज़ाब=कष्ट. ज़ात=व्यक्तित्व. फ़ना=मृत्यु. तारीक=अंधेरी. शऊरे हयात=जीवन का विवेक. तन्हा=अकेला. हमसफ़र=सहयात्री.

किसी को मेरी उदासियों की, मिरे दुखों की खबर नहीं है
कोई नहीं है जो अब मुझे रास्ता दिखाये
जो दो क़दम ही सही मगर मेरे साथ आये
मुझे बताये
कि वो कहाँ है
जो वादा कर के मुकर गया है
जो मुझ से पहले ही मर गया है

# अंजाम की तरफ़

फ़राज़े आस्माँ पर सुब्ह दम कितना उजाला था
उफ़क़ के आईनों मे ताज़ादम सूरज की किरनें मुस्कुराती थीं
फ़िज़ा को गुदगुदाती थीं
किरन इक-इक किरन मिज़रावे-साज़े-नूर थी गोया
परिन्दे शाख़सारों मे चहकते चहचहाते थे
सुहाने गीत गाते थे
भरा था आस्माँ नग़माते-जाँपरवर की तानों से
परिन्दों की उड़ानों से

मगर अब दम-ब-दम मंज़र उजड़ता जा रहा है
हो रहा है आस्माँ ख़ाली
फ़िज़ा के आईनों में जितने रोशन अक्स थे, सब बुझते जाते हैं
उजालों को थका मारा है दिन भर की मसाफ़त ने
थकन सूरज के चेहरे पर सियाही मलती जाती है
परिन्दे ख़स्तगी का ज़ख्म खा कर....
शाम की अन्धी गुफा में गिरते जाते हैं
हवा इक मातमी लहजे में पैग़ामे-दुरूदे-शब सुनाती है
ख़मोशी बढ़ती जाती है

अंजाम=अन्त. फ़राज़े आस्माँ=आकाश की ऊँचाई. उफ़क़=क्षितिज. मिज़रावे-साज़े-नूर=प्रकाश वाद्य की मिज़राब. शाख़सारों=वृक्षों के बाहुल्य का स्थल. नग़माते-जाँपरवर=जीवन-शक्ति बढ़ाने वाले गीत. दम-ब-दम=क्षण प्रति क्षण. मसाफ़त=यात्रा. ख़स्तगी=थकन. पैग़ामे-दुरूदे-शब=रात के सलाम का संदेश.

## शनीदा

सुना है मैं ने
नमूदे-सुब्हे-अजल का मंजर बहुत हसी था
नज़ारा वो कितना दिलनशीं था
किरन किरन रोशनी फलक की बुलंदियों से उतर रही थी
जमी के जुल्मतकदे को रंगीनियों से मामूर कर रही थी

सुना है मैं ने
कि इक जमाना था, ख़ुदनुमाई के शौक़ में जब
ख़ुदा ने अपनी तजल्लियों से नकाब उलट दी थी
—— और गुनहगार आदमी ने
फ़रोगे-ख़ुद आगही से अपने दिलो-नजर जगमगा लिये थे
सजा के हुस्ने-यक़ीं की महफ़िल, चिराग़े-ईमाँ जला लिये थे

सुना है मै ने
कि मुझ से पहले जो लोग रहते थे इस जमी पर
(इसी कदीम आस्मां के नीचे)
वो मुत्मइन भी थे, शादमां भी
गुज़रते लम्हो के राजदां भी
उन्हें ख़बर थी ——

शनीदा=सुना हुआ. नमूदे सुब्हे-अजल=पहले सुब्ह के होने. फलक=आकाश. जुल्मतकदे=अंधकार के घर. मामूर=भरा हुआ. ख़ुदनुमाई=आत्म-प्रदर्शन. तजल्लियों=बिजलियों. फरोग़े-ख़ुदआगही=आत्म-चेतना की शोभा. दिलो-नज़र=दृष्टि और मन. हुस्ने-यक़ीं=अत्यधिक विश्वास. चिराग़े-ईमाँ=धर्म पर दृढ़ विश्वास रूपी ज्योति. कदीम=प्राचीन. मुत्मइन=संतुष्ट. शादमाँ=प्रसन्न राजदाँ=रहस्यों को जानने वाले.

कि ज़िन्दगी धूप छाँव का एक सिल्सिला है
अज़ल से फैला हुआ है जो मंज़िले-अबद तक
(तो वो अज़ल से भी आश्ना थे, उन्हें अबद से भी आगही थी)

सुना है मैं ने
मगर मुझे आरज़ू रही है
कि ज़िन्दगी का ये दौरे-ज़रीं
कि आदमी का ये अह्दे-रफ़्ता
मैं अपनी आँखों से देख सकता

अज़ल=सृष्टि के प्रारम्भ. मंज़िले-अबद=अंतिम मंतव्य.
आश्ना=परिचित अबद=अन्त. आगही=चेतना.
दौरे ज़रीं=सुनहरा युग. अह्दे रफ़्ता=बीता हुआ युग.

## तिलिस्मे-आबो-गिल

शब की तारीकी में ख्वाबों का सफर
और अजब इक मंजरे-सहरआफ़री पेशे-नजर

काले-काले बादलो की सरसराती छाँव मे
खिलखिलाते, शोख फूलों की महकती क्यारियाँ
मौजे-खुशबू-ए-रवाँ
मौजे खुशबू-ए-रवाँ के साथ-साथ
एक लहराता पहाड़ी सिल्सिला फैला हुआ
दायरा दर दायरा
नूर की बरसात में भीगी हुई नम चोटियाँ
मरमरी नम चोटियो के दर्मियाँ
कुछ अनोखी घाटियाँ
घाटियो मे मुनअकिस

तिलिस्मे-आबो-गिल=मिट्टी और पानी का रहस्य. तारीकी=अंधेरे. मंजरे-सहरआफरीं=जादू करने वाले दृश्य पेशे-नजर=दृष्टि के सामने. शोख=चचल. मौजे-खुशबू-ए-रवाँ=बहती सुगन्ध की लहर. दायरा दर दायरा=वृत्त पर वृत्त. मरमरीं=सफेद मुनअकिस=प्रतिबिबित.

सात रंगों की उभरती डूबती रोशन धनक
सीमगूँ ढलवान से नीचे उतर कर सब्ज़ झील
झील में जलता कँवल
साहिली शादाबियों के आस पास
शबनम आलूदा, मुलायम नर्म घास
घास में इक शोलादम ख़ूँख़्वार साँप
साँप की फुंकार से इक गूना हलचल दायें-बायें
दूर तक वहशी हवा की सांय सांय

सीमगूँ=रजत. सब्ज़=हरी. शादाबियों=किनारे की हरियाली. शबनम आलूदा=ओस से भरी हुई. शोलादम=आग जैसी सांस वाला.

## आते जाते लम्हों की सदा

कल मैं बहुत ही अफ़सुर्दा था
जीने से बेज़ार हुआ था
मेरी नज़र में ———
ये दुनिया थी :
बदसूरत, बीमार सी बुढ़िया
इस दुनिया को देख के मैं ने
कल जो कहा था
वो कल तक का ही क़िस्सा था

आज मैं खुश हूँ
आज तो सचमुच जीने का अरमान है मुझ को
आज ये दुनिया ———
मेरी नज़र में:
नई नवेली सी दुल्हन है
इस दुनिया को देख के
मेरे होंटों पर जो हर्फ़ खिले हैं
आज का अफ़साना कहते हैं

अफ़सुर्दा=खिन्न.

कल जाने क्या सोच हो मेरी
कल ये दुनिया ——
सामने मेरे
क्या जाने किस शक्ल में आये
वक़्त का रंग बदलता चेहरा ——
अपना कौन सा रूप दिखाये
कल शायद मैं इस दुनिया की नई कहानी
किसी नये उन्वाँ से सुनाऊँ
अपने कहे को खुद झुटलाऊँ

मैं कि फ़कत आते जाते लम्हों की सदा हूँ
किस को ख़बर है: कब सच्चा हूँ
कब झूटा हूँ !

उन्वाँ=शीर्षक.

## सफर का आख़री मंज़र

सफ़र पर चले थे तो सोचा था क्या कुछ ———
कई रास्ते अपने क़दमों से हम रौंद देंगे
कई हमसफर हर कदम पर मिलेंगे
रफ़ाकत का नश्शा
सफर की थकन में कुछ इस तरह घुलता रहेगा
मसाफत की दूरी को महसूस होने न देगा

सफ़र पर चले थे तो सोचा था हम ने
कई मेहरबाँ बस्तियाँ रास्ते में पड़ेंगी
जो इस दिल की तन्हाइयों का मदावा करेंगी
गुज़रते हुए कैफ़परवर मराहिल
निशाते-तलब की वो सौगात देंगे
हवाओं के हाथों में हम हाथ दे कर चलेंगे
यूँ ही, नौ-ब-नौ, मुंतज़िर मंज़िलों की तरफ़ पाँव उठते रहेंगे

रफ़ाक़त=मित्रता. मसाफत=यात्रा. मदावा=उपचार. कैफ़परवर=आनन्दित करने वाले. मराहिल=मोड़. निशाते-तलब=आनन्द की अभिलाषा. नौ-ब-नौ=नये-से-नया. मुंतज़िर=प्रतीक्षित

सफर पर चले थे तो सोचा था ——— लेकिन
सफ़र पर चले थे तो सोचा कहाँ था
ये मंजर इन आँखों ने उस वक़्त देखा कहाँ था :
न रस्ता कोई लड़खड़ाती नजर में
न क़त्अ-ए-मसाफ़त का सौदा है सर में
निशाते-तलब ही की सौगात कोई
न उन ख़ाली हाथों में है हाथ कोई
थकन से लरजते हुए पांव बंजर जमी में गड़े हैं
जहाँ से सफर पर चले थे किसी दिन
वहीं हम अभी तक अकेले खड़े हैं

क़त्अ-ए-मसाफ़त=यात्रा को कम करना. निशाते-तलब=आनन्द की अभिलाषा.

## एक अच्छा शहरी

सुब्ह को जब वो घर से निकला
लाड से बीवी दरवाज़े तक छोड़ने आई
छोटे-छोटे कदम उठाता
नीची नजर से
बस स्टाप की सम्त बढा वो

दायें बायें मंज़र क्या है
तेज हवा क्यूँ चलती है, मौसम कैसा है
आगे आगे चलने वाला अनजाना साया किस का है
इन बातों की तरफ़ कब उस का ध्यान गया है
अपनी परछाईं की हद से आगे कब उस ने देखा है
इन बातों पर ध्यान वो क्यूँ दे
क्यूँ इन में वो दिलचस्पी ले
मुफ्त परागन्दा ख़ातिर हो ? और तो इन में क्या रक्खा है ?!

उस का ध्यान तो मतलूबा नम्बर की बस के पहियों की रफ़्तार में गुम
जो तेज़ी से उस के दफ़्तर के रस्ते पर दौड रही है
चौराहे और मन्दिर मस्जिद
सब को पीछे छोड़ रही है ····
उस की दिलचस्पी का मरकज तो वो ऊँची सी कुर्सी है

सम्त=तरफ़. ख़ातिर=उद्विग्न. मतलूबा=अपेक्षित. मरकज़=केन्द्र.

जिस के आगे लोहे की इक मेज रखी है
मेज प' बिखरे फ़ाइल ही उस की दुनिया है
आज और कल है
अपने हालो-मुस्तक़बिल के सारे ख़ाके उस ने उन में देख लिये है
मेज प' जितने फ़ाइल होंगे
वो उतनी ही दिलचस्पी से दफ़्तर में मौजूद रहेगा
हर फ़ाइल को बारी बारी
सधे हुए हाथों की तराज़ू में तौलेगा
मेज के इक कोने से उठा कर दूसरे कोने पर रख देगा
सारे दिन 'मसरूफ़' रहेगा

अफ़सर की ख़ुशनूदी का परवाना ले कर
शाम को सीधा घर आयेगा
दरवाजे पर बीवी इस्तक़बाल करेगी
मुस्तक़बिल के रोशन ख़्वाबों में कुछ ताजा रंग भरेगी
बस स्टाप प' भीड़ बहुत थी
चौराहे पर शायद एक्सीडेन्ट हुआ था
बीच सड़क पर एक बिदेसी कार खड़ी थी
पास ही उस के, ख़ून में डूबी लाश पड़ी थी
सब दुकानें बंद थी, शायद शहर में फिर हड़ताल हुई थी
अनपढ हॉकर अख़बारों को नचा नचा कर चिल्लाते थे
'आज की ताज़ा ख़बरें' कह कर बासी ख़बरें दोहराते थे :
तीस मरे, सत्तर जख़्मी है
भूका, नंगा, बेघर रेवड़ पार्लमिन्ट प' टूट पड़ा था
(सरकारी एलान की रू से एक मरा है, दो जख़्मी है)
सेठ धनी धनवान की सब से छोटी बेटी
अपने घर के नौकर के साथ आज सवेरे भाग गई है

हालो-मुस्तक़बिल=वर्तमान और भविष्य. मसरूफ़=व्यस्त. ख़ुशनूदी=प्रसन्नता. इस्तक़बाल=स्वागत. मुस्तक़बिल=भविष्य. रू=हिसाब, विचार.

सिह रुक्नी सरकारी कमीशन
मुल्की मईशत की हालत पर अपनी रिपोर्ट में क्या कहता है
दफ़्तर शाही मुल्की मईशत की गर्दन पर
अपने पंजे, ख़ूनी पंजे गाड़ रही है
भूकी डायन धाड़ रही है
उस के मुँह में लुक़्मा दे दो
वर्ना आज नही तो कल ये हो के रहेगा
सर फूटेंगे ख़ून बहेगा
सात समुन्दर पार भी इक कुहराम मचा है
शोर उस का भी बढते बढते ———
उस के शहर के बाजारों तक आ पहुँचा है

लेकिन वो इन सब बातों पर ध्यान ही क्यूँ दे
क्यूँ वो इन मे दिलचस्पी ले
क्यूँ दलदल मे कदम बढाये
घर के अन्दर कितना सुकूँ है
उस की मुहसिनो-मुशफ़िक़ बीवी मेज प' खाना सजा चुकी है
खाने के दौरान मे वो अपने दोनो नन्हे बच्चों को
नई पुरानी तम्सीलों से
जीने के तस्लीमशुदा गुर समझायेगा
खाना खा कर ———
दूध पियेगा, सो जायेगा

सिह् रुक्नी=तीन सदस्यों वाली. मईशत=देश की जीविका. लुक़्मा=कौर. सुकूँ=शान्ति
मुहसिनो-मुशफ़िक़=दयालु और स्नेहशीला.
तम्सीलों=उपमाओं. तस्लीमशुदा=स्वीकृत.

## समुन्दर का नोहा सुनो !

समुन्दर का नोहा सुनो —— और सोचो
समुन्दर को यूँ किस ने नाला-ब-लब कर दिया है
समुन्दर के पुरशोर संगीत में किस ने ग़म भर दिया है
ख़रोशाँ समुन्दर की मौजों को क्या दुख है,
ये किसलिये इस अलमनाक अंदाज में चीख़ती है
सिसकती सी आवाज़ में चीख़ती है

समुन्दर का नोहा सुनो —— और सोचो
समुन्दर का पानी लहू रंग क्यूँ है
समुन्दर का सीना
चमकती हुई ख़ुशनुमा सीपियां, बेबहा मोतियों का ख़ज़ीना
समुन्दर के सीने प' किस ने ये ख़ूनी सफ़ीने उतारे
समुन्दर की दौलत
समुन्दर की गहराइयों से निकाली
किनारे प' डाली
लुटेरे जहां सफ़-ब-सफ़ हाथ अपने पसारे खड़े थे
समुन्दर की शहरग में जिन की हवसनाक नज़रों के खंजर गड़े हैं

नोहा=विलाप. नाला-ब-लब=आर्त्तनाद पर बाध्य. अलमनाक=दर्दीले. बेबहा=अमूल्य. ख़ज़ीना=भण्डार. सफ़ीने=नावें. सफ़-ब-सफ़=पंक्तिबद्ध. शहरग=जीवन नाड़ी. हवसनाक=लोलुप.

समुन्दर का नोहा सुनो —— और सोचो
समुन्दर की शहरग मे बहता लहू क़तरा-क़तरा
नही ——
क़तरा क़तरा नही, शोला शोला
समुन्दर में फैला
किनारों की जानिब बढा आग और ख़ूँ का रेला
तो किस से रुकेगा
कोई है जो तूफ़ाँ के बढते कदम रोक लेगा ? !

समुन्दर का नोहा सुनो —— और सोचो
ये फूलों भरी बस्तियाँ ——
जो तुम्हारे लिये नग्माज़ारे–इरम है
ये आतिश-ब-जाँ नोहा बर लब समुन्दर की सय्याल सरहद से
अब के' कदम है !

जानिब=ओर. नग्माज़ारे-इरम=स्वर्ग का संगीत उत्पन्न करने वाला. आतिश-ब-जाँ=आत्मा मे आग लिये. नोहा-बर-लब=होंटों पर विलाप. सय्याल=द्रव. के=कितने.

## मेरा नाम

मेरा नाम सुल्तान मुहम्मद ख़ाँ है
मैं बेटा हूँ
मौलाना अहमद ख़ाँ का
जो पंजवक़्ता नमाज़ी थे
लेकिन मैं फ़ज्र की नमाज के वक़्त
सोया हुआ पाया जाता हूँ
ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ों में
दफ़्तरी मसरूफ़ियत ———
मेरा पीछा नहीं छोड़ती
मग़रिब और इशा की नमाज़ें
मुझ पर लानत भेजती है
कि ये वक़्त मेरी शराबनोशी का है
इस के बावजूद मुझे
अपने नाम पर भी इसार है
और अपनी वलदीयत पर भी

पंजवक़्ता नमाज़ी=पांचो वक़्त की नमाज़ पढ़ने वाले. फ़ज्र=प्रात.काल
ज़ुह्र=दोपहर की नमाज़. अस्र=सूर्यास्त से पहले की नमाज़.
मसरूफ़ियत=कार्यालय संबंधी व्यस्तता. मग़रिब=सायंकाल की नमाज़
इशा=रात की नमाज़. इसार=ज़िद्, हठ. वलदीयत=बाप का नाम आदि.

## गुमशुदा कड़ियाँ

बहुत दिनों का किस्सा है ये
बचपन के आकाश के नीचे
भरे पूरे घर के आँगन मे
हमजोली लम्हो से जब मै
आंख मिचौली खेल रहा था
वक़्त अचानक कोई शरारत कर जाता था
घर की कोई चीज किसी दिन
देखते देखते खो जाती थी
आंख से ओझल हो कर जैसे रूह मे शामिल हो जाती थी

आज वो सब चीजें मेरा बर्बादशुदा माजी हैं, मैं हूँ
जिस ने ये चीजे नही देखी
मेरे माजी को नही जाना
मुझ को क्या पहचान सकेगा
मैं क्या हूँ ? क्या जान सकेगा ? !

बर्बादशुदा माज़ी=विध्वस्त अतीत.

## ख़िज़ाँ का मौसम

ख़िज़ाँ का मौसम है,
पेड़ बेबर्गो-बार शाख़ों का इक हयूला है
इक ठिठरता हुआ हयूला
कि पत्ता पत्ता
हवा के यख़बस्ता सर्द झोंको की मार खा कर
तमाम सरताबियाँ भुला कर
हवा के क़दमों में जा गिरा है
ये ख़ुश्क पत्तों के ढेर, शादाबी-ए-गुजिश्ता की यादगारें
बरहना पेड़ों की ख़ुशलिबासी के मुस्कराते दिनों की पामाले-ग़म बहारें
हवा उठा कर उन्हें कहीं फेंक आयेगी
पेड़ चुप रहेंगे
हवा से कुछ भी न कह सकेंगे
कि बेज़बाँ हैं
तिलिस्मे-फ़ितरत के राज़दाँ है
मगर परिन्दो की ख़ानाबर्बाद टोलियाँ शोर कर रही हैं
वो नाशनासे-तिलिस्मे-फ़ितरत ....

ख़िज़ाँ=पतझड़. बेबर्गो-बार=बिना फल-फूल. हयूला=आकृति का आभास यख़बस्ता=बर्फ़ कर देने वाले. सरताबियाँ=उद्दण्डताएं. शादाबी-ए-गुज़िश्ता=बीती हुई प्रफुल्लता. बरहना=नंगे. ख़ुशलिबासी=अच्छे परिधान. पामाले-ग़म=दुखों की रौंदी हुई. तिलिस्मे-फ़ितरत=प्रकृति के रहस्य. राज़दाँ=रहस्य जानने वाले. ख़ानाबर्बाद=जिनके घर नष्ट हो गये हैं. नाशनासे-तिलिस्मे-फ़ितरत=प्रकृति के रहस्य से अपरिचित.

बसेरे जिन के उजड़ गये है
सब अपने अपने घरों से शायद बिछड़ गये है
*घरों की पहचान सब्ज़ पत्तों के सायबानों से थी,*
जो बर्बाद हो के मिट्टी में मिल चुके है
निगाह, घबरा के बेक़रारी के साथ
वीरानियों में चारों तरफ घुमाई
हरे-भरे गुमशुदा घरों की कोई निशानी न देख पायें
निगाह की आख़िरी हदों तक ———
फ़िज़ा खण्डर है
तमाम मंज़र ····
उजाड मौसम की जाविदानी का नक़्शगर है

सायबानों=छाया करने वालों जाविदानी=अमरता. नक़्शगर=बेलबूटे बनाने वाला.

## ... रास्ते रोशन

नया सूरज ज़मी पर रोशनी फैला रहा है,
——— दूर तक है रास्ते रोशन
हज़ारों ज़रफ़िशां किरनें
सफ़र में है चमकती तितलियां बन कर
घने जंगल, खुले मैदान, बल खाती हुई नदियां,
कि झुरमुट कोहसारों के
मुसाफ़िर रोशनी की आखिरी मंजिल नहीं कोई

नया सूरज
ज़मी पर रोशनी फैला रहा है,
——— दूर तक हैं रास्ते रोशन
हज़ारों ज़रफ़िशां किरनें

ज़रफ़िशां=स्वर्ण बिखेरती किरणें. कोहसारों=पहाड़ों.

सफ़र में है ——— चमकती तितलियाँ बन कर
हवा के दोशे-रंगीं पर
फ़िज़ायें नूरो-निकहत का है गहवारा ———
फ़सूं परवर ये नज्ज़ारा
निकल कर अपने मामूलात की अंधी गुफाओं से
चलें हम भी चमकती तितलियों की हमरकाबी में
उसी सदियों पुराने शहर की जानिब
जहाँ सदियों पुराने गोश-ए-ज़ुल्मत में,
——— इक तख़्ता गुलाबों का
गुजरते वक़्त की नैरंगियों पर दम-ब-ख़ुद हैराँ
मुसाफ़िर रोशनी की वापसी का मुंतज़िर होगा

दोशे-रंगीं=रंगीन कंधे  नूरो-निकहत=प्रकाश और सुगन्ध.
गहवारा=हिंडोला.  फ़सूं परवर=जादू को बढ़ाने वाली.
नज्ज़ारा=दृश्य.  मामूलात=नित्य कर्मों.  हमरकाबी=सहयात्रा.  जानिब=तरफ़.  गोश-ए-ज़ुल्मत=अंधेरे कोने.
नैरंगियों=विविधताओं. दम-ब-ख़ुद=मौन.  मुंतज़िर=प्रतीक्षित.

## ख़ाक-ओ-बाद से आगे

तुझे जो देखा
तो दिल में कैसी उमंग जागी !

किसी सुहाने सफ़र प' निकलें
नयी-नयी वादियों से गुज़रें
हरे भरे जंगलों में घूमें
जवाँ नदी के कुशादा सीने प' होंट रख दें
सजल पहाड़ों की सुरमई चोटियों को छू लें
हवा के झूले में खूब झूलें ····

नयी-नयी वादियों के हैरानकुन सफ़र में
हरे भरे जंगलों की पुरपेच रहगुज़र में
सुगंध धरती की शौक़ की राहबर हो, गुमराहियों का डर हो
कहीं मिलें शबनमी ढलानें, कहीं चटानों से सख़्त टीले
कहीं दरकती ज़मीं से उठते धुएँ के बादल हों नीले-नीले

कहीं परिन्दों की फ़ड़फड़ाहट
किसी अंधेरी गुफा की ख़ामोशियों प' यल्ग़ार कर रही हो
कहीं पुरअसरार घाटियों में छुपे दरिन्दे झगड़ रहे हों ····

ख़ाक-ओ-बाद=मिट्टी और हवा. कुशादा=चौड़े. हैरानकुन=अचंभित करने वाले. पुरपेच=घुमावदार राहबर=पथ-प्रदर्शक. यल्ग़ार=आक्रमण. पुरअसरार=रहस्य से भरपूर.

शऊर का काफिला, धुँधलकों की रहगुजर से
गुजरता जाये
बदन की हदबन्दियों का अहसास मरता जाये
घुटा-घुटा सा वजूद, इन्ही मंजरों के ऊपर बिखरता जाये ····

तुझे जो देखा
तो दिल के ठंडे लहू में कितने उबाल आये
न जाने क्या-क्या खयाल आये !!

शऊर=विवेक, रहगुजर=रास्ता, हदबन्दियों=सीमा निर्धारण निशान, वजूद=अस्तित्व, मंजरों=दृश्यों

## लहू में डूबता मंज़र

ये कैसे रोज़ो-शब है जो लहू में तैरते आये
गुज़रते वक़्त की पहचान इक मौजे-लहू ठहरी !

लहू में तर-ब-तर : हर लम्ह्-ए-मौजूद का चेहरा
हमारी बस्तियों की शहरगें ये काट दी किसने ?
बदन में दौड़ता ज़िन्दा लहू सड़कों प' बह निकला
नदी बन कर बहा····सड़कों से मैदानों तक आ पहुँचा
लहू ताज़ा लहू ———
        मौसम ब मौसम बहता जाता है
हरी फ़स्लें लहू के आतिशी सैलाब में डूबीं
ज़मीं की कोख ख़ूने-गर्म के लावे में जलती है
लहू की बू, सुलगती बू····हवा के साथ चलती है

मंज़र=दृश्य. रोज़ो-शब=दिन और रात. मौजे लहू=लहू की लहर.
तर-ब-तर=समूचा भीगा हुआ. लम्ह्-ए-मौजूद=उपस्थित पल.
शहरगें=जीवन शक्ति देने वाली रक्त की नसें. सैलाब=बाढ़.

सुलगते ख़ून की बू पर दरिन्दे शोर करते है
फ़िजा मे जब कोई ताइर कहो पर फड़फड़ाता है
तो जलते बाजूओं से ख़ून के कतरे टपकते है
(धुंआं गहरा न हो तो हम ये मंजर देख सकते है)

धुंऐ की फैलती चादर
लहू में डूबता मजर
अजल की तीरगी ने छीन ली आंखों की बीनाई
नज़र से जिन्दगी के आखिरी आसार भी गुम है
ये कोई मौजिजा होगा, अभी जिन्दा जो हम-तुम हैं

ताइर=पक्षी पर=पंख अजल=मौत. तीरगी=अंधेरा.
बीनाई=आंखों की ज्योति. आसार=चिह्न मौजिजा=चमत्कार.

## अंधी गुफ़ा में मौत

फ़ज़ा में किसी ग़म की झंकार मंडला रही है
हवा के लबों पर ——
कोई मातमी धुन है जो अज़ उफ़क़ ता उफ़क़ गूंजती है
मगर आस्मां दम-ब-खुद है
ज़मीं अपने महवर प' ठहरी हुई सोचती है कि : क्या खो गया है
कहां कुछ न कुछ सान्हा हो गया है

मैं इक सर्द अंधी गुफ़ा के दहाने प' गुमसुम खड़ा हूं
बहुत ज़ोर से चीख़ना चाहता हूं
भयानक उदासी का संगी फ़सूं तोड़ना चाहता हूं
बहुत ज़ोर से चीख़ना चाहता हूं . . .
मगर मेरी आवाज़ मुझ से बिछड़ कर कहीं खो गई है
मिरे सारे जज़्बे, सभी ख़्वाहिशें बेज़बां हो गई हैं
हर अहसास ख़ामोशियों की सियाही में मुंह को लपेटे पड़ा है
कोई लफ़्ज़ अब मेरे दुख का मदावा नहीं है
कोई लफ़्ज़ मेरा मसीहा नहीं है
मुझे ऐसा लगता है जैसे नफ़स दो नफ़स में
हर अहसासो-इद्राक का साथ मैं छोड़ दूंगा
इस अंधी गुफ़ा में कहीं गिर के चुपचाप दम तोड़ दूंगा

उफ़क़ ता उफ़क़ = क्षितिज से क्षितिज तक. दम-ब-ख़ुद = मौन. महवर = धुरी.
सान्हा = दुर्घटना. दहाने = द्वार. फ़सूं = जादू. बेज़बां = मौन. मदावा = उपचार.
नफ़स दो नफ़स = एक दो सांस. अहसासो-इद्राक = संवेदना और विवेक.

## नवैद

बदलते मौसम का अवल्लीं ख़ुशनवा मुग़न्नी
ये नन्हा-मुन्ना-सा इक परिन्दा
जो इक पुराने दरख़्त के नोदमीदा पत्तों की चिलमनों में
छुपा हुआ चहचहा रहा है
हवा के बरबत प' जश्ने-नौ रोज का तराना सुना रहा है
नवा-ए-रंगी के ज़ेरो-बम से
फ़ज़ा के ख़ामोश, सर्द सीने में एक हलचल मचा रहा है
नई तमाज़त से मेहरबां आफताब को हुमकता पा कर
ठिठरती बेबर्ग डालियों में क़रीन-ए बर्गो-बार पा कर
शगुफ्ता लम्हों की तितलियों को चमन में वापस बुला रहा है

नवैद=शुभ सूचना. अव्वली=पहला. ख़ुशनवा=मधुर. मुग़न्नी=गायक. नोदमीदा=नये उगे हुए. बरबत=एक वाद्य. जश्ने-नौ रोज़=नव वर्ष का उत्सव. नवा-ए-रंगी=आकर्षक आवाज़. ज़ेरो-बम=आरोह-अवरोह. तमाज़त=गर्मी. आफताब=सूर्य. बेबर्ग=बिना पत्तोंवाली. क़रीन-ए-बर्गो-बार=फूल पत्तों की संभावनाएं. शगुफ्ता=प्रफुल्लित. लम्हों=क्षणों.

तरब की धुन में
ये सरमदी गीत गा रहा है
——— कि: रंगो-निकहत के आबशारो
गुलो-समन के हसीं नजारो
ख़िज़ाँ के डर से चमन से निकली हुई बहारो
अदम की यख़बस्ता वादियों में फिरोगी ख़ानाबदोश कब तक
रहोगी यूँ बर्फ़पोश कब तक
नमू की दुनिया लिये नजर में
पलट के आ जाओ अपने घर में
ख़िज़ाँ का अफ़्रीत मर चुका है
तुम्हारी ख़ानाबदोशियों का उजाड़ मौसम गुज़र चुका है

तरब=आनन्द. सरमदी=जिस का क्षय न हो. रंगो-निकहत=रंग और सुगन्ध. आबशारो=झरनो. गुलो-समन=फूलो के नाम. ख़िज़ाँ=पतझड. अदम=मृत्यु. यख़बस्ता=बर्फ़ीली. बर्फ़पोश=बर्फ़ पहने हुए. नमू=विकास. अफ़्रीत=दानव.

## बुलावा

ज़रा ठहरो ! किधर हम जा रहे है
उधर, उस चार दीवारी के पीछे
वो बूढा गोरकन चिल्ला रहा है:

"इधर आओ ! क़दम जल्दी बढाओ
यहाँ इस चारदीवारी के अन्दर
जनम दिन से तुम्हारी मुतज़िर है
वो क़ब्रें, जिन की पेशानी प' अब तक
किसी के नाम का कत्बा नही है

गोरकन=कब्र खोदने वाला. मुनज़िर=प्रतीक्षित. पेशानी=ललाट.
कत्बा=समाधि पर लगा पत्थर जिस पर मृतक का विवरण होता है.

## ज़मीं का ये टुकड़ा

ज़मीं का ये टुकड़ा
मिरे बढ़ते क़दमों को चारों दिशाओं से अपनी तरफ़ खींचता है
गले से लगा कर मुझे भींचता है
कि बारह बरस से यहां दफ़्न हूँ मैं

ज़मीं का ये टुकड़ा
मिरे दीदा-ओ-दिल की मंजिल, मिरी जिन्दगी है
कि ज़र्रों मे उस के अजब दिलकशी है
मगर मैं तो उस से गुरेज़ां रहा हूँ
गुरेज़ां हूँ अब भी
कि उस तौद-ए-ख़ाक के रूबरू मैं
पशेमां था कल भी, पशेमां हूँ अब भी
पशेमानियां मेरे शामो-सहर का मुक़द्दर
पशेमानियों से मिरे रोज़ो-शब की फ़िज़ायें मुकद्दर

ज़मी का ये टुकडा
दिखाता है मुझ को मिरी बेबसी का वो आईना जिस में
अभी तक वो इक साअते-मुंफइल मुंअकिस है
कि जब वो मुझे या उसे क़त्ल करने को ले जा रहे थे
वही जो यहां ख़ाक की चादर ओढे हुए चुप पड़ा है
जो मेरा ही इक पैकरे-खूंशुदा है

दीदा-ओ दिल=दृष्टि और भावना. गुरेज़ां=पलायन करने वाला. तौद-ए-खाक=रेत के छोटे बड़े (लड्डुओं के) से आकार. पशेमां=लज्जित. शामो-सहर=सुब्ह और शाम. रोज़ो-शब=दिन और रात. फ़िज़ायें मुकद्दर=मलिन, वातावरण. साअते-मुंफइल=लज्जा-जनक पल. मुंअकिस=प्रतिबिंबित. पैकरे-खूंशुदा=रक्तरंजित आकृति.

तो जब वो उसे या मुझे क़त्ल करने को ले जा रहे थे
तो बेदस्तो-पा इक तमाशाई की तरह मैं उन का मुँह तक रहा था
समझ मे न आये अगर अब मैं सोचूँ मुझे क्या हुआ था
मिरी बेबसी थी किसी लम्ह-ए-बेबसीरत की साजिश
कि उस में कोई मस्लहत उस की थी
दीदो-दानिश में क़द जिस का सब से बड़ा है
जो हर अह्दे-आईन्दा-ओ-रफ्ता के इल्मो-इल्लत की हद है
अज़ल है, अबद है

ज़मीं का ये टुकड़ा
जहाँ आ के मैं ख़ुद को बूढ़ा सा महसूस करने लगा हूँ
ख़ुद अन्दर ही अन्दर बिखरने लगा हूँ
मिरी हर तगो-दौ का हासिल है, हद है
अजल है, अबद है

(मज़ारे-असलम पर)

बेदस्तो पा=बिना हाथ-पाँव का. लम्ह-ए-बेबसीरत=विवेक शून्य पल. मस्लहत=अपने हितों का ध्यान. दीदो-दानिश=आँख और बुद्धि. अह्दे-आईन्दा-ओ-रफ्ता=भूत और भविष्य का युग. इल्मो-इल्लत=ज्ञान के कारण. अज़ल=आदि. अबद=अन्त. तगो-दौ=भागदौड़.



मख्मूर सईदी—सुल्तान मुहम्मद खाँ

- टौंक (राज.) में, 31 दिसम्बर, 1934 ई. को पैदा हुए, फरवरी 1953 ई. से दिल्ली में रहते हैं।
- दिल्ली प्रवास में मख्मूर सईदी ने शाइरी के अलावा साहित्यिक पत्रकारिता में विशेष दिलचस्पी ली। उर्दू के युग प्रवर्तक पत्र 'तहरीक' के बन्द होने तक सहायक सम्पादक रहे। बाद में 'गुलफिशाँ' और 'निगार' का सम्पादन किया। उन्होंने अनुवाद भी किये है।
- अनेक पुरस्कारों से सम्मानित मख्मूर सईदी के सात कविता-सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

    गुफ्तनी
    सियह बर सफेद
    आवाज का जिस्म
    सबरंग
    वाहिद मुतकल्लम
    आते जाते लम्हों की सदा
    बाँस के जंगलों से गुज़रती हवा

- सम्पादित पुस्तकें :

    शीराज़ा
    बिस्मिल सईदी शख़्स और शाइर
    साहिर लुधियानवी : एक मुतालिआ
    किस्सः-ए-कदीमो-जदीद